श्री द्वारका
शारदापीठम्

प्रेषक : सचिव,
पू. पाद जगदगुरु शंकराचार्य महाराज

द्वारका - ३६१ ३३५ ❀ गुजरात ❀ भारत
दूरभाष : (०२८९२) २३४०६४, २३५१०२ फॅक्स : २३४४५७

संदर्भ :

दिनांक : २५/०४/२०१७
स्थान : द्वारका

नकली शङ्कराचार्यों से सावधान

समाचार पत्रों से ज्ञात हुआ कि सुजानगढ़राजस्थान में कोई स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ अपने आपको शारदापीठाधीश्वर कहकर समस्त सनातनधर्मी हिन्दुओं को दिग्भ्रमित कर रहें हैं। इनके इस कुचक्र में सुजानगढ़गांधी आश्रम के अध्यक्ष श्री सुभाष वेदी एवं स्वागतकर्त्ता श्री मोहनलाल वेदी जैसे लोग सम्मिलित होकर देश में नकली शङ्कराचार्यों को बढ़ावा दे रहें। सनातनधर्म की रक्षा के लिए आपको स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ जैसे छद्मवेषधारी शङ्कराचार्यों से बचना चाहिए।

आज से लगभग २५२४ वर्ष पहले सनातनधर्म की रक्षा के लिए भगवान् शङ्कर ने श्रीमदाद्यशङ्कराचार्य के रूप में अवतार ग्रहण कर चार वेदों के आधार पर भारत की चारों दिशाओं में चार आम्नाय पीठों की स्थापना करके अपने चार सुयोग्य शिष्यों को जगद्गुरु शङ्कराचार्य की पदवी प्रदान किया था, जिसमें प्रथम पश्चिम दिशा में श्रीशारदापीठम् द्वारका गुजरात, द्वितीय पूर्व दिशा में गोवर्धनमठ पुरी उड़ीसा, तृतीय उत्तर दिशा में ज्योतिर्मठ बदरिकाश्रम हिमालय एवं चतुर्थ दक्षिण दिशा में शृङ्गेरीशारदापीठम् शृङ्गेरी कर्नाटक है। वर्तमान में पश्चिमाम्नाय शारदापीठाधीश्वर एवं उत्तराम्नाय ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज, पूर्वाम्नाय पुरीपीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी श्री निश्चलानन्द सरस्वती जी महाराज एवं दक्षिणाम्नाय शृङ्गेरीशारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी श्री भारती तीर्थ जी महाराज विराजमान हैं।

(ब्रह्मचारी नारायणानन्द)
उपाध्यक्ष,
श्रीशारदापीठम् द्वारका (गुजरात)

श्री द्वारका

शारदापीठम्

प्रेषक : सचिव,
पू. पाद जगदगुरु शंकराचार्य महाराज

द्वारका – ३६१ ३३५ ❀ गुजरात ❀ भारत
दूरभाष : (०२८९२) २३४०६४, २३५१०९ फॅक्स : २३४४५७

संदर्भ :

दिनांक : 25-04-17
स्थान : द्वारका

प्रकाशनार्थ

स्वामी अच्युतानन्द के षडयन्त्र से सावधान

स्वामी सदानन्द सरस्वती, श्रीशारदापीठ, द्वारका

संसार में शत्रु और मित्र का होना स्वाभाविक है । यदि कोई संसार का परित्याग करके वन में भी बैठा हो और किसी से कोई मतलब न रखता हो तो भी कुछ लोग उसके शत्रु बन जाएँगे और कुछ मित्र -

मुनेरपि वनस्थस्य स्वानि कर्माणि कुर्वतः । उत्पद्यन्ते त्रयः पक्षा मित्रोदासीनशत्रवः ।।

अब इसमे बात यह है कि मित्र तो बनाने पड़ते हैं पर शत्रु बनाने नहीं पड़ते वे अपने आप बनते हैं । उसके लिए इतना ही आवश्यक है कि आप की उन्नति होती रहे, आप हर तरह से समृद्ध हों, शत्रु आपका मुफ्त में मिलेंगे । वे शत्रु और मित्र भी दो तरह के होते हैं - प्रकट और अप्रकट । अब इस बात को तो सभी समझते हैं कि मित्र से तो फायदा ही फायदा है । वह चाहे प्रकट हो चाहे अप्रकट हो और शत्रु से नुकसान ही नुकसान है । वह चाहे प्रकट हो या अप्रकट हो, लेकिन कम ही लोग इस बात को समझ सकते हैं कि प्रकट शत्रु से कहीं अधिक नुकसान पहुँचाता है अप्रकट शत्रु। जो प्रकट शत्रु हो उसे तो आप समझ सकते हैं उससे अपना बचाव कर सकते हैं, उसका मुकाबला कर सकते हैं, लेकिन जो अप्रकट है जो बाहर से तो मित्र दिखते हैं, पर अन्दर से शत्रु होते हैं, उन्हें आप पहचानते नहीं, उनका आप क्या करेंगे? हिन्दुओं के ऐसे अप्रकट शत्रुओं में एक हैं स्वामी अच्युतानन्द । शत्रु विनाश करता है । प्रकट शत्रु प्रकट रूप से विनाश करता है और अप्रकट शत्रु अप्रकट रूप से विनाश करता है । अच्युतानन्द स्वामी शाङ्कर मठों के अप्रकट शत्रु हैं, अयोग्य व्यक्ति कैसे शङ्कराचार्य पद पर विराजमान हो सकता है ।

शङ्कराचार्य पद की योग्यताएँ -

१. मठाम्नाय महानुशासन के अनुसार द्वारका शारदापीठ के शङ्कराचार्य बाल ब्रह्मचारी होना चाहिए ।

२. वर्तमान शङ्कराचार्य जब तक ब्रह्मलीन नहीं हो जाते तब तक उस पीठ पर दूसरा शङ्कराचार्य आसीन नहीं हो सकता।

३. द्वारका शङ्कराचार्य का अभिषेक सर्वप्रथम द्वारकाधीश मंदिर के चबूतरे पर ही होना चाहिए ऐसी परम्परा है ।

४. द्वारका शारदापीठ पर अधिष्ठित होने वाला वर्तमान शङ्कराचार्य का अनुगामी शिष्य हो या घोषित हो कि मेरे बाद यह बनेगा या इच्छा व्यक्त की हो ।

५. शाङ्कर परम्परा के अनुसार अभिषिक्त दण्डी संन्यासी हो, कम से कम प्रस्थानत्रयी का ज्ञाता हो ।

६. अचानक कोई शङ्कराचार्य ब्रह्मलीन हो जायें तो अन्य तीन शङ्कराचार्य रिक्त चौथे पीठ का शङ्कराचार्य का अभिषेक कर सकते हैं ।

७. भगवान् आद्यशङ्कराचार्य ने प्रथम चारों शिष्यों को चार चन्द्रमौलीश्वर दिये थे वो परम्परा से ४ मठों में हैं, अब स्वामी अच्युतानन्द कहा से चन्द्रमौलीश्वर लायेंगे ।

८. द्वारकाधीश मंदिर के चबूतरे पर जिसका अभिषेक होता उसी को मंदिर के पुजारी द्वारकाधीश के दर्शन के लिए अन्दर जाने देते हैं ।

९. नवनियुक्त शङ्कराचार्य चतुष्पीठ सम्मेलन में भाग लेते हैं । मठाम्नाय महानुशासन के अनुसार -

शुचिर्जितेन्द्रियो वेदवेदाङ्गादिविशारदः । योगज्ञः सर्वशास्त्राणां स मदास्थानमाप्नुयात् ।।५७।।

जो पवित्र, जितेन्द्रिय, वेद तथा उसके (छहो) अङ्गों (शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण, छन्द और ज्योतिष) आदि में पारंगत हो और सभी शास्त्रों अर्थात् इतिहास, पुराण तथा शास्त्रीय उपाख्यानों में समन्वय की बुद्धि रखने वाला हो, वह मेरे पीठ का अधिकारी हो ।

उक्तलक्षणसम्पन्नः स्याच्चेन्मत्पीठभाग् भवेत् । अन्यथारूढपीठोऽपि निग्रहार्हो मनीषिणाम् ।।५८।।

यदि ऊपर बतलाए गये लक्षणों से युक्त व्यक्ति हो तभी वह मेरे पीठ के ग्रहण का अधिकारी हो सकता है, अन्यथा पीठारूढ़ हो जाने पर भी मनीषियों के द्वारा (अनधिकारी) पीठ से हटा दिया जाना चाहिये ।

न जातुमठमुच्छिन्द्यादधिकारिण्युपस्थिते । विघ्नानामपि बाहुल्यादेष धर्मः सनातनः ।।५९।।

योग्य अधिकारी के उपस्थित रहते मठ-परम्परा का उच्छेद कदापि नहीं करना चाहिये । विघ्नों के भी बहुत होने के कारण (उनके शमनार्थ पीठ को आचार्य रहित नहीं रहने देना चाहिये) । यही शाश्वत नियम है । अथवा बहुत सारी बाधाओं के होने पर भी योग्य व्यक्ति मिलने पर मठ का उच्छेद कभी भी नहीं करना चाहिए । यही शाश्वत व्यवस्था है ।

अस्मत्पीठसमारूढः परिव्राडुक्तलक्षणः । अहमेवेति **विज्ञेयो 'यस्य देव' इतिश्रुतेः ।।६०।।**

उक्त (५७वें श्लोक में निर्दिष्ट) लक्षणों से सम्पन्न संन्यासी मेरे पीठ पर आसीन हो तो उसे 'मैं (शङ्कर) ही हूँ' (इस प्रकार मेरा ही स्वरूप) समझना चाहिये, क्योंकि (इस सम्बन्ध में) 'यस्य देव' इत्यादि श्रुति प्रमाण है-

'यस्य देवे पराभक्तिर्यथादेवे तथा गुरौ । तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः ।। (श्वेता. अ. ६/२३)

अर्थात् जिसे अपने इष्टदेव में परमभक्ति है, तथा जैसी इष्टदेव में हे वैसी गुरु में भी है, उसी शुद्धात्मा व्यक्ति को कहे गये ये (उपनिषद् के) तात्पर्य समझ में आते हैं । अतः शङ्कराचार्य की पीठ पर आसीन संन्यासी शङ्करभगवत्पाद का साक्षात् स्वरूप होता है, उसके प्रति पूर्ण निष्ठा प्रत्येक सनातन धर्मानुयायी में होनी चाहिये। अतः सभी को चाहिये कि वे शङ्कर, शङ्कराचार्य भगवत्पाद तथा चारों पीठों के आचार्य में अभेद बुद्धि रखे । **श्रीविद्यार्णवतन्त्र** में निम्न श्लोक से यह बात स्पष्ट हो जाती है -

गुरौ मनुष्यबुद्धिं च मन्त्रेष्वक्षरबुद्धिकाम् । प्रतिमासु **शिलाबुद्धिं कुर्वाणो नरकं व्रजेत् ।।**

भाव यह है कि गुरु को मरणधर्मा सामान्य मनुष्य समझने वाला, मन्त्रों में वर्णमाला के सामान्य अक्षरों का भाव रखने वाला तथा भगवान् की प्रतिमा को केवल पत्थर की दृष्टि से देखने वाला व्यक्ति नरकगामी होता है।

१०. अच्युतानन्द जी को सम्प्रदाय का, परम्परा का, शास्त्रों का, ब्रह्मसूत्र का, प्रस्थानत्रयी का भी ज्ञान नहीं है । जिस परम्परा के वे दण्डी संन्यासी हैं, वे उसी शाङ्कर परम्परा का अपमान कर रहे हैं । मठाम्नाय आद्यशङ्कर का बनाया हुआ संविधान है । गुरु के बनाये संविधान का पालन न करना गुरुद्रोह करना है । मठाम्नाय में लिखा है कि - **शुचिर्जितेन्द्रियो वेदवेदाङ्गादिविशारदः । योगज्ञः सर्वशास्त्राणां** स मदास्थानमाप्नुयात् **।।५७।।**

जो पवित्र, जितेन्द्रिय, वेद तथा उसके (छहो) अङ्गों (शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण, छन्द और ज्योतिष) आदि में पारंगत हो और सभी शास्त्रों अर्थात् इतिहास, पुराण तथा शास्त्रीय उपाख्यानों में समन्वय की बुद्धि रखने वाला हो, वह मेरे पीठ का अधिकारी हो ।

उक्तलक्षणसम्पन्नः स्याच्चेन्मत्पीठभाग् भवेत् । अन्यथा**रूढपीठोऽपि निग्रहार्हो मनीषिणाम् ।।५८।।**

यदि ऊपर बतलाए गये लक्षणों से युक्त व्यक्ति हो तभी वह मेरे पीठ के ग्रहण का अधिकारी हो सकता है, अन्यथा पीठारूढ़ हो जाने पर भी मनीषियों के द्वारा (अनधिकारी) पीठ से हटा दिया जाना चाहिये ।

११. स्वामी अच्युतानन्द की यह लोकैषणा उन्हें निन्दा का पात्र बनायेगी । आखाड़ा परिषद, सनातनधर्म परिषद, भारत साधु-समाज और अन्य सम्प्रदायाचार्य भी उनके इस दुस्साहस की निन्दा कर रहे हैं ।

१२. वास्तव में जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द जी के शङ्कराचार्य पद पर विराजमान होने के बाद मठों की समृद्धि हुई, शारदामठ अति जीर्ण हो चुका था, उसका पुनः जीर्णोद्धार गुरुजी ने करवाया, राष्ट्रीय समस्याओं को हल करने-करवाने में गुरुजी हमेशा तत्पर रहते हैं । रामसेत, रामजन्मभूमि, सांई प्रकरण जैसे मुद्दों पर बेबाक राय रखते हैं । गुजरात के चेरटी एक्ट को गुरुजी ने निरस्त करा दिया था । ९३ वर्ष की आयु में भी निरन्तर धर्म का प्रचार कर रहे हैं, हिन्दुधर्म की रक्षा कर रहे हैं । स्वामी अच्युतानन्द का क्या प्रभाव है, क्या योग्यता है, पूरा संत समाज जानता है ।

J. M. PANDYA
MANAGER
SHARDAPEETH
DWARKA-361335